Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581-6306

बृहत्त्रयी में वर्णित कालजयी साहित्य का पौराणिक आस्वाद

डॉ. रेखा गुप्ता
बी.एम. मेमोरियल डिग्री कॉलेज,
ककरही किशुनपुर माडरमऊ,
अम्बेडर नगर,उत्तर प्रदेश,भारत।

शोध आलेख सार – बृहत्त्रयी के पौराणिक सन्दर्भ जीवन जगत को सदैव पथ प्रदर्शक के रूप में अपने महत्त्व को स्थापित करते रहेंगे। बृहत्त्रयी के पौराणिक आख्यान मानव जीवन से जुड़कर सच्चे अर्थों में "कमले–कमलोत्पत्ति" का कार्य करते हैं।

मुख्य शब्द– बृहत्त्रयी, पौराणिक, कालजयी, साहित्य, संस्कृत, मनुष्य, समाज।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही विकास की जो अविरल धारा आरम्भ हुई है वह अब तक अनवरत रूप से प्रवाहमान है। यह विकास मानव जीवन के गतिमान होने का प्रमाण है। मनुष्य के अनवरत रूप से आगे बढ़ने के लिए निरन्तर उसकी कल्पनाएँ तथा उसका अगम्य साहस साथ देता रहा है। मानव समाज के विविध कार्य–कलापों तथा उनके प्रेरक मूल्य एवं मान्यताओं की संस्कृति अनेक प्रकार से न्यूनाधिक मात्रा में आगे आने वाले समाज को प्रभावित करती है। राष्ट्र के युग विशेष की संस्कृति उस समय की साहित्यिक कृतियों में स्वाभाविक रूप से समाहित होता है। साहित्य परवर्ती कालों में एक प्राचीन अभिलेख या पुरातत्त्व के किसी अन्य बहुमूल्य वस्तु के रूप में स्वयुगीन संस्कृति के विविध पक्षों को उद्‌भासित करता रहता है। इसीलिए साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य किसी देश की वह निधि है, जिसमें उस देश के परवर्ती जन–जीवन के विविध आयाम निहित होते हैं। विश्व के विभिन्न देशों के अपने–अपने साहित्य आज उपलब्ध नहीं होते तो पूर्व के युगों में घटित हुई अनेक विस्मयकारी एवं महानतम् घटनाओं को हम भूल चुके होते।

भारत में पौराणिक कथाओं का साहित्य प्राचीन काल से मौखिक परम्परा में चलता रहा है। यद्यपि इनमें सच्चाई कम और कल्पना अधिक रहा है। मध्यकालीन साहित्य के लिए पौराणिक कथाएँ विपुल सामग्री प्रदान करता है और इसीलिए प्राचीन काल के इतिहास में इन मूल्यवान कथाओं का अपना महत्त्व है। यथा– पुराकथाओं का अस्तित्व वेदों से पहले साहित्य के रूप में नहीं अपितु लोकवार्ता के रूप में अवश्य था। "पुराणों "में पुराणके बारे में निम्नलिखितप्रकार से कहा गया है –

पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणास्मृतम्। अनन्तरञ् चवक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः।।[1]

पुराणंसर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणास्मृतम्।[2]

प्रसिद्ध वैयाकरण महर्षि पाणिनी के शब्दों में–' अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः।[3]

एक अप्रमाणिक अथवा अनऐतिहासिक कथा जो पीढ़ी दर पीढ़ी समयानुसार चलती रहती है तथा सामान्यतः इतिहास से सम्बंधित है।[4]

संस्कृत वाग्मय में वैदिक और लौकिक साहित्य अक्षय स्रोत के रूप में है। वैदिक साहित्य में संहिता, ब्राह्मणादि में प्रसब वश अनेक आख्यान तथा विभिन्न देवताओं के स्वरूप का विवेचन स्थान–स्थान पर वर्णित है। लौकिक साहित्य में किसी विशिष्ट राजा का वृत्त, ऋषि का चरित्र या कोई अलौकिक लोकर्जन तथा प्रणयकथा कहीं संक्षिप्त रूप में तो कहीं विस्तृत रूप में वर्णित है। संस्कृत साहित्य के महाकवियों ने वैदिक और लौकिक साहित्य में वर्णित विभिन्न आख्यानों को आधार बनाकर अनेक महाकाव्यों का प्रणयन किया। संस्कृत महाकाव्यों में वर्णित पौराणिक आख्यानों के कथानकों में काल्पनिक तथा चमत्कारिक घटना प्रसCों के माध्यम से स्वाभाविकता प्रदान करता है। पौराणिक युग के अनेक असम्भाव्यांश आज के महाकाव्यों में अपेक्षित हो गये। पौराणिक कथाओं में वर्णित इन अतिशय काल्पनिक तत्त्वों की उपेक्षा करके महाकवियों ने अपनी कृतियों का प्रकृतिकरण करके कथातत्व को युगीन और विश्वसनीय बनाया है।

वैदिक साहित्य में वेदों की क्लिष्टता तथा दुरुहता को दूर करने के लिए प्राचीन ऋषियों और मुनियों ने आख्यानों का सहारा लिया है। धीरे–धीरे ये आख्यान मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गये। मानव अपने किसी भी कार्य को करने के लिए पुराणों में वर्णित ऋषियों, मुनियों, राजर्षियों या उस समय के शक्तिशाली व्यक्तियों के त्याग–तपस्या आदि से युक्त चरित्र अथवा उसके द्वारा किये गये श्रेष्ठ कार्यों से प्रेरणा लेने लगे। अपने पूर्व हुई महापुरुषों के द्वारा किये गये कार्यों तथा उन कार्यों के परिणामों को दृष्टान्त रूप में ग्रहण करने लगे। ये पौराणिक आख्यान सुसंस्कृत एवं सभ्य समाज की कल्पना करती हैं। पुराणों में वर्णित आख्यानों के माध्यम से ही पता चलता है कि यदि उसके कार्य उत्कृष्ट होंगे तो उसका परिणाम भी श्रेष्ठ होगा ,यदि उसके कार्य निकृष्ट होंगे तो उसके परिणाम भी बुरे होंगे। यथा– राक्षसराज रावण भगवान् शिव का सबसे बड़ा भक्त तथा प्रकाण्ड विद्वान माना जाता हैकिन्तु वह अपने अनुचित कार्यों के कारण ही भगवान् श्रीराम के हाथों मृत्यु को प्राप्त हुआ। इस प्रकार मानव जीवन के सुन्दर तथा सर्वांगीण विकास में पौराणिक आख्यानों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

लौकिक साहित्य में कालजयी साहित्य का उदय महर्षि वाल्मीकि के रामायण से हुआ है तो महाभारतमहर्षिवेदव्यास से। महाभारतको एक ऐतिहासिक ग्रन्थ भी कहा जाता है। रामायण एवं महाभारत संस्कृत साहित्य के उपजीव्य काव्य कहे जाते है। वाल्मीकि हमारे आदि कवि है ,किन्तु संस्कृत महाकाव्य के उद्भव एवं विकास

की दृष्टि में कालिदास से पूर्व कुछ बिखरे पद्य अवश्य प्राप्त होते है। महाकाव्य की परम्परा कालिदास से ही प्राप्त होती है जो आगे चलकर बृहत्त्रयी के रूप में आकार ग्रहण करती है।

भारवि, माघ एवं श्रीहर्ष संस्कृत के उन महाकवियों में प्रतिष्ठित हैं जिनके काव्यों ने विद्वानों को सदियों से मुग्ध किया है। विचित्रमार्ग के इन कवियों द्वारा प्रणीत किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् एवं नैषधीयचरितम् को विद्वानों ने बृहत्त्रयी के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

बृहत्त्रयी के सन्दर्भ में इतिहास और पुराण दोनों ही समाहित दिखाई पड़ते हैं। यदि इसकी कथा में महाभारत निहित है तो पल्लवन के कार्य में पौराणिक उपाख्यान निरन्तर प्रयुक्त होते है। बृहत्त्रयी में कालजयी साहित्य का पौराणिक आस्वाद मिलता है। बृहत्त्रयी के कथानक स्रोत के रूप में रामायण एवं महाभारत का प्रसc मिलता है। इसी तरह कथानक के पल्लवन में पौराणिक उपाख्यानों का प्रयोग कवियों ने किया है। भारवि ने तत्कालीन ऐतिहासिक एवं राजनीतिक दृष्टि से उथल–पुथल के समय में सोये हुए क्षत्रिय समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया है क्योंकि सामंतीय समाज विलासिता में डूबा हुआ था , इसलिए इसे दूर करने के लिए भारवि ने महर्षि व्यास से कहलवाया है कि –

"अतः प्रकर्षाय विधिर्विधेयः प्रकर्षतन्त्रा हि रणे जयश्रीः।।"[5]

इसी तरह तेजस्वी एवं सबल राष्ट्र निर्माण के लिए भारवि ने लिखा है

"मदसिक्तमुखैमृगाधिपः करिभिर्वर्तयते स्वयं हतैः।
लघयन् खलु तेजसा जगन्न महानिच्छति भूतिमन्यतः।।[6]

भारवि पुरुषार्थ के कवि है। वे संक्षेप में यही संदेश देना चाहते है कि इस देश को निवृत्ति परक तपस्या की आवश्यकता नहीं है। वरन् पराक्रम की आवश्यकता है।

बृहत्त्रयी साहित्य का वह प्रमुख आधार है जो मानव जीवन को धर्म–अधर्म के बीच सम्बन्धों के लोक में छोटे–छोटे कथा के द्वारा मानव के जीवन मे प्रवेश करता है। परशुराम का क्षत्रिय संहार जहाँ उनके प्रचण्ड क्रोध एवं उनके तपोबल को बताता है। वहीं दूसरी ओर क्षत्रियों के अत्याचार पर धर्म रक्षा का भार लिए हुए है। समुद्र मन्थन की कथा सृष्टि उत्पत्ति के लिए और जनजीवन की सभी आवश्यकताओं का सही उपयोग और प्रभाव के रूप में देखते हैं। ईश्वर के द्वारा वराह अवतार के स्वरूप का धारण करने का अभिप्राय है सभी जीवों में समान रूप से ईश्वर का वास अर्थात् संरचना के आाधार पर भिन्न–भिन्न स्वरूप होते हुए भी इनके अन्दर निहित एक ईश्वर सत्ता की समानता है। गंगावतरण की कथा पाप–पुण्य के बीच जीवन जीने, सामान्य से विशिष्ट लोगों तक का अपने में समाहित कर

लेने अर्थात् सभी जीवधारियों के जीवन के लिए जल की आवश्यकता और उद्‌गम जनक की शुद्धता से लेकर समुद्र में मिलने तक पर्यावरण चिन्तन को उभारता है।

महाभारत और भागवत की कथाओं में शिशुपालवध को लेकर दोनों ही प्रसCों में काफी समानता है। तीन प्रकार की अग्नि दावाग्नि, जठराग्नि और वाडवाग्नि तीनों ही अपने आप में महत्त्व को दर्शाते है। वाडवाग्नि जो समुद्र के अन्दर लगने वाली अग्नि के अर्थ में ग्रहण की जाती है। वहीं दूसरी ओर वह मानव जीवन में विभिन्न प्रकार के उतार–चढ़ाव होने पर भी समुद्र की तरह शान्त और सौम्य होने की प्रेरणा देती है। सुमेरु पर्वत विशाल होने पर भी मद न करने का संदेश देता है अर्थात् सहजता ही मनुष्य का आभूषण है। शेषनाग के द्वारा पृथ्वी को धारण करना जहाँ एक छोटे से जीव द्वारा निरन्तर पृथ्वी को बचाए रखने का संदेष देता हैं। रावण द्वारा अपनी शक्ति का दुरूपयोग करना उसके दम्भ को दर्शाता है, तो दूसरी ओर हमें शक्ति के सदुपयोग और अभिमानरहित जीवन जीने का संदेश देखने को मिलता है। नृसिंहअवतार सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति और सर्वत्र ईश्वरीय सत्ता के साथ मनुष्य को हमेशा अच्छे विचार रखने की प्रेरणा देती है।

नैषधीयचरितम् के पौराणिक आख्यानों में भी धर्म, अध्यात्म और सबसे अपने–अपने विशिष्ट महत्त्व को दर्शाता है। बलराम की कथा सदैव अपने उत्तेजना और शक्ति के रूप में, केशव की विभिन्न प्रतिमा मूर्तिकला सौन्दर्य को स्थापित करता है। राधा नाम का प्रसC कर्ण की माता और कृष्ण की प्रिया दोनों ही नाम एक जैसे होते हुए भी कर्ण की माता द्वारा जहां स्वयं ही पुत्र का मोह होते हुए भी, हृदय के अन्दर घुटते हुए वात्सल्य को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर राधा, कृष्ण के प्रति सच्चे प्रेम की मर्यादा को स्थापित करती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बृहत्त्रयी के पौराणिक सन्दर्भ जीवन जगत को सदैव पथ प्रदर्शक के रूप में अपने महत्त्व को स्थापित करते रहेंगे। बृहत्त्रयी के पौराणिक आख्यान मानव जीवन से जुड़कर सच्चे अर्थों में "कमले–कमलोत्पत्ति" का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मत्स्य पुराण, अध्याय 53, श्लोक 3
2. पद्य पुराण, (सृष्टि खण्ड), अध्याय 1.45
3. 'पाणिनी, अ"टाध्यायी, 8.2.105.
4. द आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी पृ0 806
5. किरातार्जुनीयम्, ३/१७
6. किरातार्जुनीयम्, २/१८